समकालीन हिन्दी लघुकथा का अनुसंधानपरक अध्ययन

RESEARCH STUDY OF CONTEMPORARY HINDI SHORT STORIES

हिन्दी विभाग (कला संकाय)

पी–एच.डी उपाधि हेतु

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,अजमेर

को प्रस्तावित

शोध प्रबन्ध की संशोधित रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. मनीष रंजन

सह–आचार्य , हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय, रायपुर,

जिला – भीलवाड़ा (राज.)

शोधकर्त्री

सरिता कुमावत

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

सत्र – 2017–18

Scanned with CamScanner

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,अजमेर

OUTLINE OF PROPOSED RESEARCH WORK

प्रस्तावित शोध कार्य की संशोधित रूपरेखा

1. Name of Scholar (In English)	:	SARITA KUMAWAT
(In Hindi)	:	सरिता कुमावत
2. Title of the Research (In English)	:	RESEARCH STUDY OF CONTEMPORARY HINDI SHORT STORIES
(In Hindi)	:	समकालीन हिंदी लघुकथा का अनुसंधानपरक अध्ययन

Scanned with CamScanner

3.Location : शोध–कार्य स्थल –

A. Department Where the Work is to be done : **Department of Hindi,**
Government College, Raipur
Maharshi Dayanand Saraswati
University, Ajmer (Raj)
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, रायपुर
महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय,
अजमेर

प्रस्तावित शोध कार्य के लिए राजकीय महाविद्यालय, रायपुर (भीलवाड़ा) का चयन किया गया है। यहाँ कार्यरत शोध निर्देशक महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से शोध निर्देशक के रूप में पंजीकृत हैं। यह महाविद्यालय यू.जी.सी एवं राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत है। यहाँ शोध –कार्य करने संबंधी आधुनिक युग की इंटरनेट की सुविधा है तथा जिले के पुस्तकालय में अध्ययन और शोध सामग्री संकलन की सुविधा भी उपलब्ध है।

Scanned with CamScanner

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objective : परिचय , प्रस्तावित शोध का महत्त्व व उद्देश्य : –

आज हिंदी साहित्य जगत में लघुकथा एक चर्चित विधा है। पत्र पत्रिकाओं में निरंतर प्रकाशन तथा संचार क्रांति के कारण इसे पढ़े जाने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। लघुकथा का विकास नई शताब्दी के साथ ही मुख्य तौर पर प्रारंभ होता है। इस दौर की लघुकथाओं के प्राचीन मूल्यों कथ्य, संवेदना, शिल्प आदि में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है। यह दौर एक ओर भारत की स्वाधीनता प्राप्ति के उत्साह से भरा था वहीं दूसरी ओर साहित्य में भी नवीन आशाओं के संचार का भी संकेत दे रहा था। आम जन की पीड़ा, यथार्थ व सुविधाओं को प्रकट करने का उपाय लघुकथा द्वारा सामने आया। लघुकथा नाम से लघु भले ही हो किंतु पाठक की संवेदना पर बिना किसी भूमिका के सीधे प्रहार के साथ कथा का समापन करते हैं ।

भारतीय स्वाधीनता के साथ ही लघुकथा साहित्य में आमूलचूल परिवर्तन हुआ । देश विभाजन की त्रासदी इस समय की लघुकथा का एक मुख्य अंग साबित हुई। बदलते समय और वक्त की माँग को पूरा करते हुए इस अभिव्यक्ति को ईमानदारी से निभाने के लिए लघुकथाकार नई जिज्ञासाओं का अनुसंधान करता है । यदि हम पूरी सदी पर विश्वास करें तो भी हम देखते हैं कि जनता दो विश्व युद्धों की विभीषिका, स्वतंत्रता और उसके बाद मोहभंग की स्थिति से गुजर चुकी थी, जिससे भारतीय जनमानस को तेजी से बदल कर रख दिया। उस दौर की लघुकथाओं में *देश का महत्व , आग, युद्ध* आदि महत्त्वपूर्ण है।

स्वतंत्रता के बाद की लघुकथा में उपस्थित तत्कालीन सामाजिक बदलाव को महत्त्वपूर्ण मानते हुए कमलेश्वर ने *सारिका* पत्रिका में लघुकथाकारों को बहुलता से स्थान देना प्रारंभ किया था। सातवें दशक से पूर्व कथा लेखन की लघुकथा परंपरा को जी–जान से अपनाने वालों में कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, आचार्य जगदीश चंद्र मिश्र, सुदर्शन, आनंद मोहन अवस्थी, शरद कुमार, रामनारायण उपाध्याय आदि हैं परंतु उनका उद्देश्य सामाजिकों में आदर्श स्थापित करने के संदर्भ में ही रहा है। नगरीय सभ्यता का आगमन शहरों की बढ़ती आबादी और बढ़ते अपराधों के बीच सत्ता की लूट से उपजी अमानवीय राजनीति से भारतीय जनता त्रस्त हो गई । ऐसे में लघु कथा के माध्यम से आमजन के विचारों को बढ़ावा मिला और इन तमाम पहलुओं पर लघु कथाओं के माध्यम से कटाक्ष किए गए। समयाभाव के कारण पाठक बड़ी रचनाएँ नहीं पढ़ पाते हैं और लघु कथाओं के माध्यम से इस अंतर्मन की समस्या को चुनौती देने के काम लघुकथा ही करती हैं , जिससे पाठक के विशाल हृदय को आंतरिक शांति मिलती है। इतिहास की व्यर्थता,

Scanned with CamScanner

धर्मवाद, साहित्य की शुद्धता, निजता की सुरक्षा आदि का विचार लघुकथाओं से सहज ही समझा जा सकता है । छोटे से शीर्षक में ही पूरे विशाल मानव मस्तिष्क को उल्लावित करने की शक्ति होती है।

आठवें दशक के बाद हिंदी लघुकथा परंपरा पारंपरिक कहानी विधा से अलग पहचान बनाने लगी। इसमें युवा कहानीकारों का ही अधिक योगदान रहा। लघुकथा आंदोलन को रचनात्मक स्वरूप प्राप्त करने के लिए लघुकथा को अनेक बहस–मुबाहिसों से गुजरना पड़ा। इस दौर के लघुकथाकार कमल चोपड़ा, बलराम अग्रवाल, मधु दीप, सुकेश साहनी, अशोक भाटिया, माधव नागदा, संदीप अवस्थी, जगदीश कश्यप, नंद भारद्वाज, मधुरेश, कीर्ति सिंह जैसे कथाकार सामाजिक यथार्थ की ओर उन्मुख हुए।

स्वातंत्र्योत्तर भारत के नौवें दशक में दलित चेतना, नारी चेतना ने आंदोलन का रूप धारण कर लिया है। 'प्रत्येक व्यक्ति एक का मत' का सिद्धांत नारी सशक्तिकरण के मूल में है। स्वाधीन भारत की लोकतंत्रीय व्यवस्था ने अपने अधिकारों के प्रति जागरुक बनाया है। हिंदी लघुकथा पर भी इसका प्रभाव पड़ा। इस दौरान लघुकथा का विकास तेजी से बढ़ने लगा। आज समाज में संवेदना कमतर होती जा रही है। अतःनई पीढ़ी के रचनाकारों ने इन पहलूओं को समझते हुए लघुकथा में अपनाया है। इस मूल संवेदना पर लघुकथाओं में हरिशंकर परसाई, रवींद्र वर्मा, मुकेश वर्मा, रामेश्वर कांबोज, सुकेश साहनी आदि ने लेखनी चलाई ।

समकालीन विमर्श एक आंदोलन का रुप ले चुका है। इस कारण लघुकथा के क्षेत्र में इसकी पडताल इस शोधकार्य से पूर्ण अपेक्षित है। स्वाधीन भारत में नारी शिक्षा के व्यापक प्रचार–प्रसार में नारी चेतना को आंदोलन बनाने में मुख्य भूमिका अदा की है। आधुनिकीकरण, यंत्रीकरण और तकनीकी विकास के कारण आज की भारतीय नारी की तस्वीर बिल्कुल बदल गई है। आज की स्त्री पुरुष की अनुगामिनी न होकर उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है। समकालीन दौर में स्त्री की स्थिति, उसकी समस्या और समाज में उसके अस्तित्व का अध्ययन आवश्यक हो गया है। इसकी आवश्यकता को महसूस कर लघुकथा में स्त्री विमर्श तेजी से पाँव पसार रहा है। मालती जोशी, मन्नू भंडारी, सुधा ओम ढींगरा, मंजू श्री गुप्ता, सरला अग्रवाल, शकुंतला किरन, अलका अग्रवाल आदि की कलम से स्त्री के अंतर्मन में झांक कर स्त्री की पीड़ा, स्वप्न व आशाओं को आवाज दे रही है। लेकिन आधुनिक परिवेश में तेजी से बदलते मानवीय संबंधों, स्त्री–पुरुष के आपसी रिश्तों के बीच एक नारी की स्थिति और उसका अस्तित्व नित नई चुनौतियों का सामना कर रहा है।

समाज के हाशिये के वर्ग को भी लघुकथा अपना स्थान दे रही है। पिछड़ी जाति के नाम पर उपेक्षित जनों के सरोकार भी लघुकथा में स्थान बना रहे हैं। इस कारण लघुकथा ने वर्तमान दौर की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया है। लघुकथा क्षण विशेष की घटना भाव या विचार में निहित कथाबीज की तात्विक अभिव्यक्ति हैं। उपन्यास कहानी यदि जीवन के अंश का चित्रण है तो लघुकथा क्षण

Scanned with CamScanner

के अंश का। इसी बात को मुकाम पर पहुँचाने में लघुकथा को चर्चित करने में पत्रिकाओं का योगदान रहा है क्योंकि पत्र–पत्रिकाएँ समाज का आईना होती हैं। हंस, मधुमती, अक्षर, लहर, संबोधन, सारिका, वाक् साहित्य अमृत, सृजनकुंज, कथादेश आदि पत्रिकाओं ने लघुकथाओं को लोकप्रिय बनाया।

लघुकथा में सभी वादों से मुक्ति और लघु मानव के महत्त्व की प्रतिष्ठा की गई है। समकालीन लघुकथाकार आज किसी भी सामाजिक, धार्मिक या राजनीतिक विचारधारा, परंपरा, विश्वास, आस्था अथवा रूढ़ि से बँधा हुआ नहीं है। वह यथार्थवादी मानसिकता रखते हुए समाज में बदलाव चाहता हैं। उत्तरशती में साहित्य की विधाओं में सृजनशीलता में मनोविज्ञान का महत्व रहा है। बाल मनोविज्ञान के सहारे बाल मन की मानसिकता को समझाना, उनकी जिज्ञासाओं को, उनके मन में उमड़ते सवालों को, उन की उमंग को, लघुकथा के माध्यम से सामने लाया गया है। लघुकथा में बाल मनोविज्ञान पर अरविंद लेखराज, असद अहमद कुरेशी आदि कथाकारों ने लेखनी चलाई हैं। वर्तमान में लघुकथा अपनी अनेक संभावनाओं को प्रदर्शित करती है। समग्रतः लघुकथा एक खुली भूमि पर विचरण कर अपना बहुआयामी विस्तार पाती दिखाई दे रही है।

हिंदी के प्रमुख लघुकथाकारों में अनिता वर्मा ,अनीता राकेश, अन्नपूर्णा श्रीवास्तव, अलका अग्रवाल, ऊषा अग्रवाल, ऊषा किरण सोनी, ऋतु सारस्वत, एम. डी. मिश्रा 'आनंद', कमल चोपड़ा, कमलेश भारतीय, करूणाश्री, कुमुद शाह ,कृष्णा भटनागर, कीर्ति सिंह ,गोविंद गौड़, गोविंद शर्मा ,जगदीश कश्यप, दिशा पारीक, नंद भारद्वाज ,नदीम मुकुट सक्सेना, प्रताप दीक्षित, पारस दासोत, पुष्पलता कश्यप, भारती बंसल ,मंजुला गुप्ता ,महेन्द्र सिंह महलान ,मुरलीधर वैष्णव, मंजुला शर्मा, मिथिलेश कुमारी, रचना गौड़ भारती रत्नकुमार सांभरिया , रमेश उपाध्याय ,रमेश बतरा, रमेश जैन ,संदीप अवस्थी, संध्या तिवारी, सरला अग्रवाल सुधा अग्रवाल, सुधा भार्गव, हरदर्शन सहगल, हरदान हर्ष, सतीश राठी, हसन जमाल, राजेश आहुजा, लता अग्रवाल, शकुंतला किरण, शोभा रस्तोगी, बद्रीप्रसाद पंचोली, ज्ञानदेव आहूजा आदि हैं।

इस दृष्टि से हिंदी लघुकथाओं के अनुसंधानपरक अध्ययन के उद्देश्य का निम्न बिंदुओं से संकेतित किया जा सकता है –

- समकालीन हिंदी लघुकथाओं का साहित्यिक विधाओं और विमर्शों से संबंध के मर्म को समझाना।
- लघुकथा में मानवीय मूल्यों के क्षरण और संवेदनाओं की परख करना।
- बदलते परिप्रेक्ष्य में लघुकथाकार की विचारधारा में बदलाव की विवेचना करना।
- समकालीन हिन्दी लघु कथाओं में मनोवैज्ञानिक तत्वों की पहचान कर उस की मूल संवेदना पर प्रकाश डालना।
- हिंदी की प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिकाओं की लघुकथाओं के विभिन्न पहलुओं की पहचान कर प्रकृति और मानव के अंतर्संबंधों की व्याख्या कर तथ्यपरक अनुशीलन करना।

Scanned with CamScanner

5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study) :

अध्ययन विषय पर पूर्व में किये गये शोधकार्य का पुनरावलोकन –

किसी भी शोध परियोजना की दिशा निर्धारित करने में अतीत ज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान होता है। ऐसा आधार मिल जाने पर नवीन ज्ञान के सृजन में काफी सहयोग मिलता है। इसको शोध को दिशा व गति प्रदान करने के क्रम में आवश्यक वैचारिक आवश्यकता की पूर्ति भी होती है। अतः इस सदर्भ में शोध परियोजना की समीक्षा आवश्यक है।

इस विषय को केंद्र में रखते हुए पूर्व में बहुत ही कम शोध उपलब्ध हुए हैं। ऐसा शोध विषय की नवीनता के चलते ऐसा हुआ है। *नवनीत शर्मा* की किताब *हिंदी लघुकथा का समाजशास्त्रीय अध्ययन* में उन्होंने समाज अध्ययन पर दृष्टि डाली है। *सुप्रनीत शर्मा* का शोध ग्रंथ *हिन्दी लघुकथा, स्वरूप, परम्परा एवं मूल्यांकन, 1985* मे लघुकथा के विकास व परंपरा का चिंतन व विश्लेषण किया गया है। अंजली शर्मा की किताब *हिंदी लघुकथा का विकास* में लघुकथा के विकास क्रम को बताया गया है। इसी क्रम में *सुकेश साहनी बीसवीं सदी की प्रतिनिधि लघुकथाएँ* एवं रामेश्वर कांबोज 'हिमांशु' का *21वीं सदी की लघुकथा : अंतर्वस्तु का संधान* जैसे ग्रंथ भी उपलब्ध है। लेकिन इन ग्रंथों में समकालीन कालखंड में लिखी लघुकथाओं का परिचय ही मिलता है। इनमें भ्रष्टाचार, भूमंडलीकरण, आतंकवाद, जातिवाद, राजनीति में अपराध और अपराधियों का राजनीतिकरण, समकालीन विमर्श, यथार्थ जीवन दृष्टि एवं मनोवैज्ञानिक परिवेश जैसे नवीन तथ्यों पर समग्रतः किसी ने भी दृष्टिपात नहीं किया है। इन शोध–ग्रंथों में विषय का एकांगी रूप ही मिलता है।

Scanned with CamScanner

6. Research Gap identified in the proposed Field of Investigation :

प्रस्तावित शोध कार्य व पूर्व में किये गये शोधकार्य के अन्तराल का आकलन –

प्रस्तावित विषय पर किसी भी शोधार्थी ने एक समग्र अध्ययन प्रस्तुत नहीं किया है। इस संबंध में सन् 1985 में पंजाब विश्वविद्यालय में *पुष्पनीत शर्मा* का शोध ग्रंथ *हिन्दी लघुकथा, स्वरूप, परम्परा एवं मूल्योकन* मिलता है। इस शोधकार्य में वैश्वीकरण के दौर और समकालीन हिन्दी लघुकथाकारों को सम्मिलित नहीं किया गया है। इसी क्रम में वि.बी.एस.पूर्वांचल विश्वविद्यालय में *हिन्दी कहानी के विकास क्रम में लघुकथाओं का वर्तमान और भविष्य* शीर्षक से सन् 2002 में प्रस्तुत शोधकार्य मिलता है। इस शोधकार्य में लघुकथाओं को केवल हिन्दी कहानी के विकास के परिप्रेक्ष्य में ही देखा गया है। इसी प्रकार महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में ***नवनीत शर्मा*** ने ***हिंदी लघुकथा का समाजशास्त्रीय अध्ययन*** के रूप में शोध कार्य किया है। इसमें उन्होंने समाजशास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से हिन्दी लघुकथा पर शोधकार्य किया है। इस अध्ययन को कुछ लघुकथाकारों की रचनाओं के आलोक में ही केंद्रित किया गया है। इक्कीसवीं सदी के आरंभ में और आज के जो नये लेखक निरंतर सृजन कर्म में लीन हैं – उन पर किसी शोधार्थी की दृष्टि अभी तक नहीं गई ।

लघुकथा पर पूर्व में किये गये इन शोधकार्यों में किसी भी शोधार्थी ने विवेच्य विषय पर अनुसंधानपरक दृष्टि नहीं डाली है। समकालीन दौर में संचार के नये माध्यमों में भी लघुकथा को प्रकाशित किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध के अध्ययन क्षेत्र के अंतर्गत इसे भी सम्मिलित किया जायेगा। इस रूप में प्रस्तावित शोध लघुकथा के समग्र अध्ययन और विश्लेषण करने का सामर्थ्य रखता है। जिस प्रकार उपन्यास के बाद कहानी की लोकप्रियता बढ़ी थी, उसी प्रकार आज के परिप्रेक्ष्य में कहानी से भी कम समय में पढ़े जाने के कारण लघुकथा लोकप्रिय हुई है। नये संचार माध्यमों –वेब पत्रिका आदि पर भी यह लोकप्रिय हुई है। लघुकथा पर केंद्रित संग्रह (25 भागों में) अभी हाल ही में प्रकाशित हुआ है और इसे आधार ग्रंथ के रूप में किसी शोध कार्य में स्थान नहीं दिया गया है। अतः विवेच्य शोध में नयी सदी की हिंदी लघुकथाओं का अध्ययन कर शोध प्रस्तुत किया जाएगा। इस शोध में कई ऐसे नये बिंदु उभर कर सामने आएँगे, जो अब तक प्रकट नहीं हुए हैं। इसलिए प्रस्तावित शोध शोध–अंतराल को पाटने का कार्य करेगा ।

Scanned with CamScanner

7. Major Hypothesis (If any) : मुख्य परिकल्पना –

बीसवीं सदी के बाद की सदी नयी आकांक्षाओं और चुनौतियों के साथ उपस्थित होती है। उत्तरशती स्वतंत्र भारत में उदारीकरण और नई सदी के जन्म तक के कालखण्ड को समेटे हुए है। लेखकों ने इस दौर को अपने अपने ढंग व ईमानदारी से पकड़ने की कोशिश की है। इस सदी में इतिहास का अंत, लेखक की मृत्यु जैसी कई घोषणाएँ हो रही थी। ऐसी स्थिति में हिन्दी के कथाकारों ने अपने यथार्थ की अभिव्यक्ति के दायित्व को किस प्रकार निभाया – यह देखने का प्रयास इस शोध में किया जायेगा। लेखक के व्यापक युगबोध, दूरदर्शिता और मानवीय सरोकार की परख की जाएगी। लघुकथाओं में व्यक्त युग की परिवेशगत संलिष्टता का परिचय प्राप्त करना भी विवेच्य शोध के परिक्षेत्र में सम्मिलित किया जायेगा।

Scanned with CamScanner

8. Research Methodology : शोध–पद्धति –

प्रस्तावित शोध का स्वरूप जोसफ गिबाल्डी की पुस्तक "एम.एल.ए. हैंड बुक" के अनुसरण पर आधारित होगा। इसमें इंडेक्स पद्धति से शोध कार्य करना उचित प्रतीत होता है। आधुनिक शोध में इसका मुख्य रूप से प्रयोग किया जाता है। इस पद्धति में अधिक से अधिक संदर्भ ग्रंथों का संकलन किया जाता है और उनका अध्ययन किया जाता है।

आंकड़ों का स्रोत –

प्राथमिक स्रोत – समकालीन प्रमुख लघुकथाओं का संग्रह किया जायेगा और कुछ लघुकथाकारों से साक्षात्कार लेकर अपने शोध विषय के लिए नई सामग्री संगृहीत की जाएगी। इसके साथ–साथ लघुकथाओं के संग्रह को भी आधार ग्रंथ के रूप में उपयोग किया जाएगा।

द्वितीयक स्रोत – इसके अंतर्गत लघुकथा और उनसे संबंधित शोध–प्रबंध, समकालीन लघुकथा आंदोलन के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य में लिखी गई पुस्तकें, कथा शिल्प पर आधारित पुस्तकें, कथा साहित्य से संबंधित पुस्तकें आदि को सम्मिलित किया जायेगा।

इस संदर्भ में हिंदी की प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं एवं प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया व इंटरनेट पर प्रकाशित उपलब्ध सामग्री का उपयोग किया जाएगा।

Scanned with CamScanner

प्रस्तावित शोध प्रबंध की अध्याय योजना

(प्रस्तावित शोध कार्य की अस्थायी अध्ययन योजना शोध की प्रगति, तथ्यात्मक उपलब्धियों व कारणों से संभावित कुछ परिवर्तनों के अतिरिक्त प्रस्तावित शोध कार्य के शीर्षक और उपशीर्षकों सहित अस्थायी अध्याय योजना निम्नलिखित है)

समकालीन हिन्दी लघुकथा का अनुसंधानपरक अध्ययन

प्रथम अध्याय : हिन्दी लघुकथा : परम्परा एवं विकास

1.1 लघुकथा का आशय

1.2 लघुकथा का अन्य विधाओं से संबंध

1.3 हिन्दी लघुकथा का आरंभ और विकास

1.4 समकालीन लघुकथा का स्वरूप

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : समकालीन साहित्यिक विमर्श

2.1 उत्तर आधुनिकता की अवधारणा

2.2 स्त्री विमर्श के स्वरूप

2.3 दलित विमर्श

2.4 आदिवासी विमर्श

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : समकालीन हिन्दी लघुकथा : अन्तर्वस्तु

3.1 सामाजिक – राजनीतिक पक्ष

3.2 आर्थिक – सांस्कृतिक पक्ष

3.3 मनोवैज्ञानिक – चेतना

3.4 मध्यवर्ग – चित्रण

3.5 ग्राम्य – बोध

3.6 यथार्थ – बोध

निष्कर्ष

Scanned with CamScanner

चतुर्थ अध्याय : समकालीन हिन्दी लघुकथा : भाषा एवं शिल्प

4.1 लघुकथा का शिल्पगत आयाम

4.2 शब्द वैविध्य

4.3 भाषाई सृजनात्मकता

4.4 प्रतीक एवं बिम्ब

4.5 मुहावरे – लोकोक्तियाँ

निष्कर्ष

पंचम अध्याय : समकालीन हिन्दी लघुकथा की उपलब्धियाँ और सीमाएँ

उपसंहार

Scanned with CamScanner

9. Reference cited : संदर्भ सूची –

(अ) आधार ग्रंथ

1. आभा गुप्ता : *मिट्टी की गंध तथा अन्य लघु कथाएँ,* गौरव बुक्स, दिल्ली, 2010
2. चित्रा मुद्गल : *बयान (लघुकथा संग्रह),* भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2003
3. जयमंत मिश्र : *लघुकथा संग्रह (भाग 1–2)* साहित्य अकादमी, 2007
4. जितेन्द्र व डॉ. नीरज सुधांशु : *अपने–अपने क्षितिज (ल.स.),* वनिका पब्लिकेशन दिल्ली, 2017
5. *पुणताम्बेकर : श्रेष्ठ लघुकथाएँ पुस्तक संस्थान,* नेहरू नगर कानपुर, 1977
6. बालकृष्ण गुप्ता : *गुरुज्ञान (आईना दिखाती लघुकथाएँ),* अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
7. भगीरथ परिहार व रमेश जैन : *राजस्थान की चर्चित लघुकथाएं,* मनु प्रकाशन, दिल्ली, 1974
8. मधुदीप व प्रबोधकुमार गोविल आदि : *पड़ाव और पड़ताल (खण्ड 1–27)* दिशा प्रकाशन, दिल्ली, 1988–2018
9. मधुदीप : *नई सदी की धमक (ल.स.),* दिशा प्रकाशन, 2018
10. मधुदीप : *समय का पहिया,* दिशा प्रकाशन दिल्ली, 2015
11. रामकुमार आत्रेय : *बिन शीशे का चश्मा (ल.स),* अंतिका प्रकाशन, 2012
12. त्रिलोक सिंह ठकुरेला : *समसामयिक हिन्दी लघुकथाएँ,* राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2016
13. त्रिलोक सिंह ठकुरेला : *आधुनिक हिन्दी लघुकथाएँ,* राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर,
14. रत्नकुमार सांभरिया : *प्रतिनिधि लघुकथा शतक,* अनामय प्रकाशन, 2010
15. कमला प्रसाद, धनंजय वर्मा आदि : *परसाई रचनावली (1–2),* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985

(आ) सहायक ग्रंथ

1. अशोक कुमार शुक्ल : *लघुकथा समीक्षा,* गद्य कोश, 2012
2. अंजली शर्मा : *हिंदी लघुकथा का विकास,* शताक्षी प्रकाशन, रायपुर, 2006
3. अमरनाथ अब्ज : *लघुकथा : चिंतन एवं विश्लेषण,* बी.बी.एस. प्रकाशन, 2001
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल : *हिंदी साहित्य का इतिहास,* नागरी प्रचारिणी सभा काशी, 2006
5. इंद्रनाथ मदानप : *हिंदी कहानी पहचान और परख,* लिपि प्रकाशन, दिल्ली, 1992
6. इंद्रनाथ मदान : *आधुनिकता और हिंदी साहित्य,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973
7. एच.एन. व्यास : *समकालीन भारतीय समाज में उभरते सामाजिक मुद्दे एवं समस्याएं,* साहित्यागार, जयपुर, 2017

Scanned with CamScanner

8. एम. एन. श्रीनिवासन : *आधुनिक भारत में जातिवाद तथा अन्य निबंध,* हिंदी माध्यम कार्यान्वयन, निदेशालय, दिल्ली, 1992
9. एम. एन. श्रीनिवासन : *आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
10. कमलेश्वर : *नई कहानी की भूमिका,* शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, 1978
11. कृष्णदत्त पालीवाल : *भारतीय अस्मिता और दृष्टि,* सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 2014
12. गणपति चंद्र गुप्त : *हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2004
13. चंद्रशेखर कर्ण : *आंचलिक कहानी,* चित्रलेखा प्रकाशन, इलाहाबाद, 1977
14. देवराज उपाध्याय : *आधुनिक हिंदी कथा साहित्य और मनोविज्ञान,* साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1956
15. देवीशंकर अवस्थी : *हिंदी कहानी संदर्भ और प्रकृति,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993
16. डॉ. नगेंद्र : *भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास,* हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2009
17. नवल किशोर : *मानववाद और साहित्य,* राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1971
18. नामवर सिंह : *कहानी : नई कहानी,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
19. नित्यानंद तिवारी : *आधुनिक साहित्य और इतिहास बोध,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1994
20. पद्म सिंह शर्मा : *हिंदी गद्य विधाएं और विकास,* साहित्य संस्थान, दिल्ली, 1970
21. बच्चन सिंह : *आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1986
22. भगवती प्रसाद वाजपेय : *मेरी प्रिय कहानियाँ,* राजपाल एंड संस, 1970
23. मदुरेश सिंह : *समकालीन कहानी दशा और दिशा,* दृष्टि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001
24. मस्तराम कपूर : *साहित्यकार का संकट,* लेखक मंच, दिल्ली, 1992
25. रघुवीर सिन्हा : *हिंदी कहानी : हिंदी कहानी समाजशास्त्रीय दृष्टि,* अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1977
26. रघुवर दयाल वार्ष्णेय : *हिंदी कहानी बदलते प्रतिमान,* पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली, 1975
27. रजनीश कुमार : *हिंदी कहानी के आंदोलन : उपलब्धियाँ और सीमाएँ,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली,1986
28. राजेंद्र यादव : *कहानी स्वरूप और संवेदना,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1968
29. रामदरश मिश्र एवं नरेंद्र मोहन : *हिंदी कहानी : दो दशक की यात्रा,* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1970
30. रामविलास शर्मा : *भाषा और समाज,* पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1961
31. रामस्वरूप चतुर्वेदी : *हिंदी साहित्य और संवेदना का इतिहास,* लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद,

Scanned with CamScanner

2015

32. रामावतार शर्मा : *भारतीय राजनीति के ज्वलंत प्रश्न*, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली, 1994

33. लक्ष्मण चंद चौहान आधुनिक *हिंदी कहानी साहित्य में प्रगति चेतना*, कोणार्क प्रकाशन, दिल्ली, 1972

34. लक्ष्मीनारायण लाल : *आधुनिक हिंदी कहानी*, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर, मुंबई, 1962

35. वासुदेव : *हिंदी कहानी और कहानीकार*, वाणी विहार, वाराणसी, 1957

36. विनय : *समकालीन कहानी : समांतर कहानी*, दी मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, 1977

37. विजय देवनारायण साही : *छठवां दशक*, हिन्दुस्तान एकेडमी इलाहाबाद,2007

38. विश्वनाथ त्रिपाठी : *कुछ कहानियां कुछ विचार*, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2008

39. विश्वनाथ त्रिपाठी : *हिंदी साहित्य का सरल इतिहास*, ओरिएंटल ब्लैक स्वान प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2012

40. शकुंतला किरण : *हिन्दी लघुकथा* , संकेत प्रकाशन, 2010

41. शंभू गुप्त : *कहानी समकालीन चुनौतियाँ*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

42. शशि भूषण पांडे : *नई कहानी के विविध प्रयोग*, लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, 1974

43. श्याम सिंह शर्मा : *साहित्य और समाज*, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, 2015

44. श्यामाचरण दुबे : *भारतीय ग्राम*, वाणी प्रकाशन नई, दिल्ली, 1996

45. श्यामाचरण दुबे : *समय और संस्कृति*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996

46. श्यामाचरण दुबे : *मानव और संस्कृति*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1998

47. सच्चिदानंद सिन्हा : *भूमंडलीकरण की चुनौतियां*, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2004

48. सुरेंद्र : *नई कहानी प्रकृति और पाठ*, परिवेश प्रकाशन, जयपुर, 1968

49. हरदयाल व डॉक्टर नगेंद्र : *हिंदी साहित्य का इतिहास*, मयूर पेपर बैक्स, नई दिल्ली, 2016

50. हजारी प्रसाद द्विवेदी : *भाषा साहित्य और देश*, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली 1998

51. हरदेव बाहरी : *आधुनिक कहानियां*, मेहरचंद मुंशीराम, नई दिल्ली, 1952

कोश ग्रंथ

1. धर्मेन्द्र वर्मा : *प्रभात हिंदी शब्दकोश*, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010
2. धीरेन्द्र वर्मा आदि : *हिन्दी साहित्य कोश*, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 2014
3. बी.एल. माली अशांत : *राजस्थानी शब्द कोश*, राजस्थान भवन फाउण्डेशन, जयपुर, 2014
4. मधुदीप : *विश्व हिन्दी लघुकथाकार कोश*, दिशा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018

Scanned with CamScanner

5. रामशरण गौड़ : *पौराणिक आख्यान कोश,* विभूति प्रकाशन, दिल्ली, 1981

प्रमुख पत्रिकाएँ –

- अक्षर– जयपुर
- कथादेश– दिल्ली
- कथाक्रम– लखनऊ
- द संडे इंडियन– नोएडा
- मधुमती– उदयपुर
- वाक्– नई दिल्ली
- साहित्य अमृत– नई दिल्ली
- सृजन कुंज– श्रीगंगानगर
- संबोधन– कांकरोली
- संस्कृति– नई दिल्ली
- हंस – नई दिल्ली

वेब पत्रिकाएँ –

- जनगाथा
- जनकृति
- लघुकथा वार्ता
- लघुकथा डॉट कॉम

समाचार पत्र –

- जनसत्ता – नई दिल्ली
- राजस्थान पत्रिका – नई दिल्ली
- दैनिक भास्कर – जयपुर

Sarita
हस्ताक्षर

शोधकर्त्री – सरिता कुमावत

दिनांक –05/09/2018

हस्ताक्षर मय सील व दिनांक
शोध पर्यवेक्षक – डॉ. मनीष रंजन
सह–आचार्य, हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय रायपुर, भीलवाड़ा

Scanned with CamScanner